

## रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 14

भविष्यवाणी की व्याख्या के लिए दिशानिर्देश

भविष्यवाणी की व्याख्या के लिए दिशानिर्देश

1. गद्यांश का सावधानीपूर्वक व्याकरणिक ऐतिहासिक प्रासंगिक विश्लेषण करें

हम "भविष्यवाणी की व्याख्या के लिए दिशानिर्देश" पर चर्चा कर रहे हैं। 1. उसके अंतर्गत है, "परिच्छेद का सावधानीपूर्वक व्याकरणिक ऐतिहासिक प्रासंगिक विश्लेषण करें।" यह ऐसा कुछ नहीं है जो भविष्यवाणी संबंधी प्रवचनों और न ही व्याख्यात्मक कार्य तक ही सीमित है। मुझे लगता है कि यह दुभाषिया का बुनियादी मौलिक कार्य है। आपको पहले शब्दों के अर्थ, प्रयुक्त भाषा, अन्यत्र शब्दों के उपयोग का अध्ययन करना और फिर शब्दों का एक-दूसरे के साथ संबंध को समझना होगा। उस समय आप व्याकरणिक निर्माण में लग जाते हैं। लेकिन इससे परे, आपको पैगंबर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उन लोगों को देखना चाहिए जिनसे पैगंबर ने बात की थी। हमें जो आगे बढ़ता है उसके संदर्भ के साथ-साथ जो आगे बढ़ता है उसके संदर्भ और उस पुस्तक में विचार के प्रवाह को भी देखना चाहिए जिसमें भविष्यवाणी एक हिस्सा है। मुझे लगता है कि यह तालाब में लहरों की तरह काम करता है। आप पवित्रशास्त्र के संपूर्ण कैनन को देखते हैं, जहां आप संकीर्ण निकट संदर्भ को देखते हैं और फिर आप बाइबल के संपूर्ण संदर्भ तक बड़े संदर्भ में अपना रास्ता बनाते हैं। यदि कोई समानांतर मार्ग हों तो उनसे परामर्श लिया जाना चाहिए। तो यह काफी बुनियादी चीज़ है जिससे आप सभी परिचित हैं। "परिच्छेद का सावधानीपूर्वक व्याकरणिक, ऐतिहासिक, प्रासंगिक विश्लेषण करें।"

2. स्पष्ट रूप से बताएं कि यह परिच्छेद किससे या क्या संदर्भित करता है।

2. "स्पष्ट रूप से बताएं कि अनुच्छेद किससे या क्या संदर्भित करता है।" हम इस तरह के प्रश्न पूछ सकते हैं, "क्या संदेश उस श्रोता या पाठक के बारे में है जिसे यह संबोधित है, या क्या यह उन्हें किसी और के बारे में बताता है?" उस प्रश्न को पूछकर हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि कोई अनुच्छेद मूलतः पूर्वानुमानित है या उपदेशात्मक। यदि यह उपदेशात्मक है और भविष्यवक्ता केवल

उन लोगों को सिखा रहा है जिनसे वह बोलता है, तो कुछ महत्वपूर्ण सत्य जो उन्हें संबोधित हैं, जिनका हम पर अनुप्रयोग हो सकता है। क्या वह उनसे कुछ कह रहा है या यह किसी और के बारे में है? यदि ऐसा है तो यह पूर्वानुमानित हो सकता है या किसी तरह से पूर्वानुमानित तत्वों से युक्त हो सकता है। हमें इसे सुलझाना होगा। क्या परिच्छेद पूर्वानुमानित है? यदि यह पूर्वानुमानित है तो क्या इसमें कोई शर्तें जुड़ी हुई हैं? यह उस तरीके से महत्वपूर्ण हो सकता है जिसमें कोई इसकी पूर्ति की तलाश करता है। ऐसी कोई शर्त हो सकती है जो बताई न गई हो लेकिन आपको वह प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए। यदि यह पूर्वानुमानित है, तो क्या यह पूरा हुआ या अधूरा? मुझे लगता है कि शुरुआत में आप उस प्रश्न का उत्तर पूर्ति के लिए पवित्रशास्त्र में कहीं और देखकर देंगे। आपके पास पुराने नियम में बहुत सी भविष्यवाणियाँ हैं जो पुराने नियम के काल में पहले से ही पूरी हो चुकी हैं। पुराने नियम में आपकी अन्य भविष्यवाणियाँ हैं जिन्हें आप नए नियम की अवधि में पूरा होता हुआ पाते हैं। बेशक, आपके पास ऐसी भविष्यवाणियाँ हैं जो उस समय में पूरी होती हैं जिसमें हम रह रहे हैं, चर्च के समय में, या आपके पास ऐसी भविष्यवाणियाँ हो सकती हैं जो अभी तक पूरी नहीं हुई हैं लेकिन प्रभु के दिन के समय की प्रतीक्षा कर रही हैं। तो, आपको इसे सुलझाना होगा। यदि यह पूर्वानुमानित है, तो क्या यह पूरा हुआ या अधूरा?

### 3. पूर्ति उद्धरणों पर ध्यान दें

यह हमें 3 पर लाता है, "पूर्ति उद्धरणों पर ध्यान दें।" मेरे कहने का मतलब यह है कि नए नियम में कुछ ऐसे वाक्यांश हैं जो यह कहने के लिए संकेतक या सहायक हो सकते हैं कि यह एक भविष्यवाणी है जो विशेष रूप से अपनी पूर्ति पाती है। मेरे मन में कुछ ऐसे वाक्यांश हैं जैसे "ताकि यह पूरा हो सके।" निःसंदेह आपको वह पूर्ति उद्धरण मिल गया होगा। जब आप इसे देखते हैं, तो मुझे लगता है कि आम तौर पर यदि आप सभी उपयोगों को देखते हैं, तो यह पूर्ति को ध्यान में रखते हुए काफी विशिष्ट है। एक भविष्यवाणी है जो यहाँ पूरी होती है। हालाँकि, एक योग्यता; कुछ मामलों में उस वाक्यांश को शब्दों या विचारों में चित्रण या समानता के संबंध को ध्यान में रखते हुए लिया जा सकता है, जहाँ पुराने नियम का कथन अपने आप में पूर्वानुमानित नहीं था।

एक। मैथ्यू 1:22 - ईसा. 7:14 मुझे लगता है कि यदि आप कुछ उदाहरण देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है। यदि आप मैथ्यू 1:22 को देखते हैं, तो आपको यह कथन मिलता है, "यह सब उस बात को पूरा करने के लिए हुआ जो प्रभु ने भविष्यवक्ता के माध्यम से कहा था, 'कुंवारी गर्भवती होगी और एक बेटे को जन्म देगी और इममानुएल कहलाएगी,' जिसका अर्थ है ईश्वर हमारे साथ है।" यह यशायाह 7:14 का कथन है, जो यहां मैरी पर लागू होता है जिसने पवित्र आत्मा के माध्यम से गर्भधारण किया और वह कुंवारी है जिसने गर्भधारण किया और एक बेटे को जन्म दिया। यहां आपको यशायाह 7:14 की भविष्यवाणी की पूर्ति मिलती है। यह काफी विशिष्ट है।

बी। मत्ती 8:17 - ईसा। 53:4 मत्ती 8:17 में, आप पढ़ते हैं कि यीशु ने कुछ लोगों को चंगा किया, "इससे भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा कही गई बात पूरी हुई, 'उसने हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।'" यशायाह 53:4. प्रभु के सेवक पर अनुच्छेदों की उस श्रृंखला का चरमोत्कर्ष अंश होने के कारण, इसे पूर्णता मिलती है।

सी। मत्ती 12:17 - ईसा। 42:1-4 मत्ती 12:17 में लिखा है, "यह इसलिये हुआ कि जो यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि यह मेरा सेवक है जिसे मैं ने चुन लिया है, जिस से मैं प्रसन्न हूं। मैं उस पर अपना आत्मा डालूंगा, और वह जाति जाति को न्याय का प्रचार करेगा। वह न झगड़ा करेगा, न चिल्लाएगा, और न सड़कों पर कोई उसकी आवाज सुनेगा। कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा, और न सुलगती हुई बत्ती को वह तब तक बुझाएगा जब तक वह न्याय को विजय न पहुंचा दे, और जाति जातियां उसके नाम पर आशा रखेंगी।" यह यशायाह 42:1-4 से पहले की तरह उन सेवक अंशों में से एक का उद्धरण है।

डी। मत्ती 21:4 - जकर 9:9 मत्ती 21:4 में, "यह भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई बात को पूरा करने के लिए हुआ" और उद्धरण जकर्याह 9:9 से है, "सिख्योन की बेटी से कहो, अपने को देखो राजा तेरे पास आता है, कोमल और गधे पर सवार होकर, बछेड़े पर, गधे के बच्चे पर।" तो आम तौर पर आप पाएंगे कि यह काफी विशिष्ट संकेतक है कि यह पहले दी गई भविष्यवाणी की पूर्ति है।

इ। जेम्स 2:21-23 - जनरल 15:6 हालाँकि, कभी-कभी यह पुराने नियम के कथन के समान शब्दों या विचारों के संबंध या चित्रण की तरह होता है जो एक पूर्वानुमानित कथन नहीं था। याकूब 2:21-23 को देखें जहां आपको यह वाक्यांश मिलता है, "क्या हमारे पूर्वज इब्राहीम को उस कार्य के लिए धर्मी नहीं माना गया था जब उसने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया था? आप देखते हैं कि उसका विश्वास और उसके कार्य एक साथ काम कर रहे थे और उसने जो किया उससे उसका विश्वास पूर्ण हो गया। और पवित्रशास्त्र का वह वचन पूरा हुआ जो कहता है," और यहां यह उत्पत्ति 15:6 को उद्धृत करता है; "'अब्राहम ने ईश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता माना गया,' और उसे ईश्वर का मित्र कहा गया।" यदि आप उत्पत्ति 15:6 पर जाते हैं, तो यह तब है जब प्रभु ने अब्राहम से कहा था कि एलीएजेर उसका उत्तराधिकारी नहीं होगा, बल्कि उसका उत्तराधिकारी होगा। उसका अपना पुत्र उसका उत्तराधिकारी होगा और उसने कहा, "तारों को गिनने के लिए आकाश की ओर देखो, यदि तुम सचमुच उन्हें गिन सकते हो।" और तब उस ने उस से कहा, तेरी सन्तान भी ऐसी ही होगी। फिर पद 6 कहता है, "इब्राहीम ने प्रभु पर विश्वास किया और उसने इसे धार्मिकता के रूप में श्रेय दिया।" उस कथन की भविष्यवाणी करना कठिन है, लेकिन यह केवल अब्राहम के विश्वास का दावा है और इसका महत्व क्या था।

आप जेम्स 2:23 में "पूरा करें" के उपयोग पर आते हैं, तो उत्पत्ति 15:6 में उस कविता का संदर्भ देते हुए, मुझे लगता है कि आपको यह कहना होगा कि यह इस बिंदु पर उद्धरण का एक सूत्र है, जितना कि यह संकेत दे रहा है। भविष्यवाणी और पूर्ति। आपकी ग्रंथ सूची में इस शीर्षक के अंतर्गत आर. लेयर्ड हैरिस का एक लेख है। यह लेख आपकी ग्रंथ सूची के पृष्ठ 11 पर है, जिसे *इतिहास की व्याख्या* में "भविष्यवाणी, चित्रण और टाइपोलॉजी" कहा जाता है, जो 1986 में प्रकाशित इस स्कूल के संस्थापक डॉ. एलन मैकरे के सम्मान में प्रकाशित एक खंड है। वह उस वाक्यांश का उपयोग करता है जिसका मैंने अभी उपयोग किया है, "उद्धरण का सूत्र," इस तरह के संदर्भों के लिए।

एफ। मत्ती 2:17-18 - यिर्म 31:15 ऐसा ही एक मत्ती 2:17-18 है, जहाँ आप पढ़ते हैं, "तब

भविष्यवक्ता यिर्मयाह के द्वारा जो कहा गया था वह पूरा हुआ: 'रामा में एक आवाज़ सुनाई देती है, रोना और बड़ा विलाप, राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही है, सांत्वना देने से इनकार कर रही है क्योंकि वे अब नहीं रहे" और वह यिर्मयाह 31:15 है। यदि आप यिर्मयाह 31:15 पर वापस जाते हैं, तो आप पढ़ते हैं, "रामा में विलाप और बड़े रोने का शब्द सुनाई देता है; राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही है; और सांत्वना पाने से इनकार कर रही है, क्योंकि उसके बच्चे अब नहीं रहे।" संदर्भ में, यह बेबीलोन की बन्धुवाई के निर्वासितों के विषय में रोने की बात कर रहा है।

जी। प्लेरोनो उद्धरण सूत्र यह एक पूर्वानुमानित कथन नहीं है, लेकिन जेम्स 2:21-23 और मैथ्यू 2:17-18 दोनों इन दो पुराने नियम के ग्रंथों का संदर्भ देते हैं जो "भविष्यवाणी करने योग्य" पाठ नहीं थे, उन्हें संदर्भित करने के लिए इस क्रिया *प्लेरोनो का उपयोग करें*। क्या इसका मतलब यह है कि उन्हें गलत तरीके से भविष्यवाणियों के रूप में उद्धृत किया गया था? या इसका मतलब यह है कि मैथ्यू की व्याख्या का तरीका नाजायज था? यह वही है जो हैरिस का सुझाव है, उनका सुझाव है कि समस्या *प्लेरो के अनुवाद के कारण* "पूर्ण" के रूप में होती है। निश्चित रूप से कई संदर्भों में इसका यही अर्थ है। लेकिन हैरिस का तर्क यह है कि इसका हमेशा अर्थ होता है "पूरा करना" इतना निश्चित नहीं है और कभी-कभी ऐसा लगता है कि इसे पूर्ण भविष्यवाणी के फार्मूले के बजाय उद्धरण के फार्मूले के रूप में उपयोग किया जाता है। उस व्यापक उपयोग को ध्यान में रखा जाना चाहिए, लेकिन फिर आम तौर पर *हिना किसी न किसी रूप में आता है कृपया देखें* कि भविष्यवाणी कब होती है, लेकिन आपको सावधान रहना होगा।

एच। गेग्रैटि उद्धरण सूत्र दूसरा सूत्र *गेग्रैटि है*, "यह लिखा गया है।" फिर, यह भी अक्सर पूर्ति दर्शाता है। हालाँकि, कभी-कभी यह केवल संदर्भ होता है। मरकुस 1:2 में पूर्णता है, "यह यशायाह भविष्यवक्ता में लिखा है" और फिर यशायाह 40:3 से एक उद्धरण, "मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजूंगा, जो तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा; जंगल में किसी की आवाज़ सुनाई दी, 'प्रभु के लिए रास्ता तैयार करो, उसके लिए सीधे रास्ते बनाओ।' तो जॉन आया, तो, उस कविता में एक पूर्णता है। मैथ्यू 4:4 में एक संदर्भ; "यीशु ने उत्तर दिया, ' *यह लिखा है*: "मनुष्य केवल रोटी से नहीं, परन्तु परमेश्वर

के मुख से निकलने वाले हर एक वचन से जीवित रहता है।" यह व्यवस्थाविवरण 8:3 का एक उद्धरण है, जो कोई पूर्वानुमानित कथन नहीं है। लेकिन वह एक उद्धरण दे रहा है।

मैं। लेगो

आइए *लेगो के रूपों पर चलते हैं* (मैं कहता हूँ)। जब यह अपने आप में खड़ा होता है, तो यह आमतौर पर एक ऐतिहासिक संदर्भ का संकेत होता है, भविष्यवाणी और पूर्ति का नहीं। मत्ती 22:31 को देखें, "परन्तु मरे हुआओं के पुनरुत्थान के विषय में क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने तुम से क्या कहा?" और फिर निर्गमन 3:6 का उद्धरण है, "मैं इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ। वह मरे हुआओं का नहीं, परन्तु जीवितों का परमेश्वर है।" यह बस पुराने नियम के एक पाठ का संदर्भ है। अधिनियम 7:48, "हालाँकि, परमप्रधान मनुष्यों द्वारा बनाए गए घरों में नहीं रहता है, जैसा कि भविष्यवक्ता *कहता है*।" फिर उद्धरण यशायाह 66:1 है, "स्वर्ग मेरा सिंहासन है, पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है। वह घर कहाँ है जो तुम मेरे लिये बनाओगे? ' भगवान कहते हैं. 'मेरा विश्राम स्थान कहाँ होगा?" यह कोई पूर्वानुमानित कथन नहीं है। तो यह सब 3 के अंतर्गत है, "पूर्ति उद्धरण पर ध्यान दें।" वे निश्चित रूप से संकेतकों और पूर्वानुमानित अंशों की पहचान करने में मदद करेंगे, जो पूर्ति का एक बिंदु है लेकिन आपको इससे सावधान रहना होगा।

4. दोहरी पूर्ति या दोहरे संदर्भ के विचार से बचें

4, "दोहरी पूर्ति या दोहरे संदर्भ के विचार से बचें।" मुझे लगता है कि जब आप किसी भविष्यवाणी की पूर्ति की तलाश में हैं, तो अंतर्निहित व्याख्यात्मक सिद्धांत के रूप में दोहरे संदर्भ या दोहरे अर्थ के विचार को अपनाना अच्छा नहीं है। दूसरे शब्दों में, हमें दोहरे संदर्भ की तलाश में नहीं भटकना चाहिए। आपको यह नहीं मानना चाहिए कि दी गई भविष्यवाणी एक ही समय में दो या दो से अधिक अलग-अलग घटनाओं को समान शब्दों के साथ संदर्भित कर सकती है। यदि आप ऐसा करते हैं तो इसका मतलब है कि आप मान रहे हैं कि एक ही संदर्भ में एक ही शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं। मुझे लगता है कि यह व्याख्याशास्त्र की दृष्टि से एक खतरनाक बात है, यह कहना कि एक ही शब्द और एक ही संदर्भ के कई अर्थ होते हैं जब तक कि इसमें किसी प्रकार का दोहरा अर्थ

न हो, लेकिन यह व्याख्याशास्त्र का सामान्य नियम नहीं है। हम उस तरह से भाषा का प्रयोग नहीं करते. आम तौर पर जब कोई बयान दिया जाता है तो उस बयान से एक विशिष्ट अर्थ निकलता है और सुनने वाले को वही अर्थ समझ में आता है। मुझे लगता है कि यह अवधारणा न केवल भविष्य कहनेवाला सभी बाइबिल कथनों पर लागू होती है, बल्कि यह निश्चित रूप से भविष्य कहनेवाला रूपों पर भी लागू होती है। आप किसी दिए गए कथन के एकल अर्थ या अर्थ की तलाश करते हैं, आप बाइबिल के कथनों के एकाधिक अर्थ या अर्थ की तलाश नहीं करते हैं।

एक। ड्वाइट पेंटेकोस्ट - दोहरा संदर्भ ड्वाइट पेंटेकोस्ट के तहत अपने उद्धरणों में पृष्ठ 28 को देखें, जिन्होंने *थिंग्स टू कम* नामक युगांतशास्त्र पर एक खंड लिखा था जिसमें वह "दोहरे संदर्भ के नियम" की बात करते हैं। उनके दृष्टिकोण से, "भविष्यवाणी शास्त्र की व्याख्या में दोहरे संदर्भ के कानून की तुलना में कुछ कानूनों का पालन करना अधिक महत्वपूर्ण है। दो घटनाएँ, जो अपनी पूर्ति के समय से व्यापक रूप से भिन्न हैं, को एक भविष्यवाणी के दायरे में एक साथ लाया जा सकता है। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि भविष्यवक्ता के पास अपने दिन के साथ-साथ भविष्य के समय के लिए भी एक संदेश था। दो व्यापक रूप से अलग-अलग घटनाओं को भविष्यवाणी के दायरे में लाने से दोनों उद्देश्य पूरे हो सकते हैं। फिर वह यहां हॉर्न नाम के एक अन्य व्यक्ति को उद्धृत करता है, "एक ही भविष्यवाणियों का अक्सर दोहरा अर्थ होता है, और विभिन्न घटनाओं का उल्लेख होता है, एक निकट की, दूसरी दूर की; एक लौकिक, दूसरा आध्यात्मिक या शायद शाश्वत। इस प्रकार भविष्यवक्ताओं के सामने अनेक घटनाएँ होती हैं, उनकी अभिव्यक्तियाँ आंशिक रूप से एक पर और आंशिक रूप से दूसरे पर लागू हो सकती हैं। परिवर्तन करना हमेशा आसान नहीं होता है. जो पहले में पूरा नहीं हुआ है उसे हमें दूसरे पर लागू करना चाहिए और जो पहले ही पूरा हो चुका है उसे अक्सर पूरा किया जाना बाकी माना जा सकता है।"

अब आप इसे कैसे कार्यान्वित करते हैं, आपको विशिष्ट अंशों को देखने की आवश्यकता है, लेकिन यही अवधारणा है। यदि आप एरिक सॉयर के पास जाते हैं तो पी पर अगली प्रविष्टि। 29. सॉयर कहते हैं, "हर चीज़ ऐतिहासिक रूप से अनुकूलित है और फिर भी एक ही समय में अनंत काल से जुड़ी हुई है। सब कुछ एक साथ मानवीय और दिव्य, लौकिक और अति-लौकिक है।"

और, भविष्यवक्ताओं के बारे में बोलते हुए, "वे बेबीलोन से वापसी की बात करते हैं और साथ ही भविष्य में शांति के राज्य का उद्घाटन करने के लिए इज़राइल की सभा का वादा करते हैं (यशायाह 11:11-16)।" हमने अभी यशायाह 11:11-16 के बारे में बात की। आप देखिए वह जो कह रहा है वह यह है कि भविष्यवाणी निर्वासन से वापसी के बारे में बात कर रही है। लेकिन साथ ही और उन्हीं शब्दों में यह भविष्य में शांति के राज्य की बात भी कर रहा है - युगांतशास्त्रीय। इसमें समान शब्दों के लिए दोहरा अर्थ, दोहरा संदर्भ है।

*का परिचय* नामक खंड में 1993 में वर्ड द्वारा प्रकाशित क्लेन, ब्लॉमबर्ग और हबर्ड द्वारा *बाइबिल की व्याख्या*, वे कहते हैं, "हमें भविष्यवाणी की दूसरी विशेषता जोड़नी चाहिए: इसकी दो पूर्तियाँ हो सकती हैं, एक पैगंबर के जीवनकाल के करीब और एक उसके बहुत पहले।" जब आप किसी भविष्यवाणी को देखते हैं और उसकी पूर्ति के लिए पूछते हैं, तो एक निकट भविष्य में और एक दूर के भविष्य में होती है। उन सभी का संदर्भ एक ही कथन में दिया गया है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो तर्क देते हैं कि यह सिद्धांत, या जैसा कि पेंटेकोस्ट इसे कहता है, "दोहरे संदर्भ का कानून" एक सिद्धांत है जिसका उपयोग भविष्यवाणी कथनों की व्याख्या में किया जाना चाहिए - कई संदर्भों की तलाश में।

बी। वन्रॉय की प्रतिक्रिया मैं जो सुझाव दे रहा हूँ, मुझे नहीं लगता कि वह वैध है। यह इस बात पर वापस आता है कि भाषा कैसे काम करती है। क्या हम भाषा का उपयोग एक ही शब्द और एक ही संदर्भ के लिए करते हैं लेकिन दो अलग-अलग बातें कहते हैं? आप व्याख्या के इतिहास में पीछे जाएं, लूथर और केल्विन इसके खिलाफ जोरदार तर्क देते हैं, लेकिन निश्चित रूप से वे रूपक व्याख्या की पृष्ठभूमि के खिलाफ तर्क दे रहे हैं, क्या आपके पास कई अर्थ हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एक दुभाषिया का पहला दायित्व उसके लेखक द्वारा इच्छित पाठ के अर्थ तक पहुंचना है। लूथर ने कहा, "केवल एकल, उचित, मूल अर्थ, जिस अर्थ में इसे लिखा गया है, वह अच्छे धर्मशास्त्री बनाता है। पवित्र आत्मा स्वर्ग और पृथ्वी पर सबसे सरल लेखक और वक्ता है। इसलिए उनके शब्दों में कोई एकवचन और सरल भाव नहीं हो सकता, जिसे हम लिखित या शाब्दिक रूप से उच्चारित भाव कहते हैं।"

वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ फेथ अध्याय 1 खंड 9 में पवित्रशास्त्र और उसकी व्याख्या के बारे में एक दिलचस्प बयान है और मैं आपको कुछ संक्षिप्त कथन पढ़ना चाहता हूं, "पवित्रशास्त्र की व्याख्या का अचूक नियम स्वयं पवित्रशास्त्र है; और इसलिए, जब किसी धर्मग्रंथ के सही और गलत अर्थ के बारे में कोई प्रश्न होता है" और तब एक कोष्ठक कथन होता है जिसे मैं प्राप्त करना चाहता था, "(जो कई गुना नहीं है, बल्कि एक है), इसे खोजा जा सकता है और अन्य स्थानों द्वारा जाना जाता है जो अधिक स्पष्ट रूप से बोलते हैं। तो आप देख रहे हैं कि यहां जो बात कही जा रही है वह यह है कि कुछ अंशों की व्याख्याएं अधिक स्पष्ट हैं। आप कम स्पष्ट की सहायता के लिए अधिक स्पष्ट का उपयोग करते हैं। लेकिन उस बयान को देने के संदर्भ में वह कोष्ठक कथन है, "जब किसी भी धर्मग्रंथ (जो कई गुना नहीं है, बल्कि एक है) के सही और गलत अर्थ का सवाल है, तो इसे अन्य स्थानों द्वारा खोजा और जाना जा सकता है जो बोलते हैं और स्पष्टता से।" मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक सिद्धांत है।

सी। जॉन ब्राइट के अर्थ के कई स्तर अपने उद्धरण पृष्ठ 25 को देखें। यह जॉन ब्राइट की पुस्तक, *द अथॉरिटी ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट से लिया गया है*। वह कहते हैं, "आम तौर पर यह माना जाता था कि पवित्रशास्त्र में अर्थ के विभिन्न स्तर होते हैं। ओरिजन के पास मनुष्य के स्वभाव की कथित ट्राइकोटोमी के अनुरूप तीन प्रकार की भावना थी: शरीर, आत्मा और आत्मा। एक शाब्दिक या भौतिक अर्थ था (अर्थात्, शब्द अपने स्पष्ट अर्थ में क्या कहते हैं), एक नैतिक या उष्णकटिबंधीय अर्थ, (अर्थात्, ईसाई आत्मा का एक अर्थ, जो इस प्रकार आचरण के लिए शिक्षा और मार्गदर्शन देता है), और एक आध्यात्मिक या रहस्यमय भावना। बाद में, फिर भी एक चौथी इंद्रिय जोड़ी गई।" सुधारक और वेस्टमिंस्टर कन्फेशन इसी पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं, चौथा भाव, "एनागोगिक या एस्केटोलॉजिकल सेंस।" इस प्रकार, शास्त्रीय उदाहरण देने के लिए, 'जेरूसलम' शब्द को मध्य युग में चार अर्थों के रूप में समझा जाता था: वस्तुतः यह यहूदा में नाम के उस शहर को संदर्भित करता था, उष्णकटिबंधीय रूप से, वफादार ईसाई आत्मा को, रूपक रूप से (रहस्यमय रूप से), को मसीह का चर्च, और ईश्वर के स्वर्गीय शहर के अनुरूप, जो हमारा शाश्वत घर है। एक ही पाठ में इन सभी चार अर्थों में शब्द को समझना संभव था, हालाँकि आवश्यक नहीं था।

तो वहां आपके पास दोहरा संदर्भ नहीं है, आपके पास चार गुना संदर्भ है। “लेकिन आध्यात्मिक अर्थ की तुलना में शाब्दिक अर्थ की बहुत कम परवाह करने की प्रवृत्ति थी, क्योंकि पाठ का सही अर्थ आध्यात्मिक है। वास्तव में, कुछ धर्मग्रंथों की - जैसा कि यह माना जाता था - शाब्दिक रूप से व्याख्या नहीं की जा सकती, क्योंकि यह उन चीजों के बारे में बताता है जो अनैतिक हैं और इस प्रकार भगवान के लिए अयोग्य हैं (व्यभिचार, अनाचार, हत्या, आदि), और अधिकांश धर्मग्रंथ बहुत प्राचीन या बहुत तुच्छ हैं, यदि शाब्दिक रूप से, दैवीय रहस्योद्घाटन का एक उपयुक्त माध्यम माना जाता है (लंबी वंशावली, पशु बलि के नियम, तम्बू के आयाम, आदि) ऐसे मार्ग अपना सही अर्थ तभी देते हैं जब आध्यात्मिक रूप से व्याख्या की जाती है। जब आप रूपक लगाते हैं तो आप इस प्रकार के अंशों में आध्यात्मिक अर्थ डालते हैं। “परिणाम पवित्रशास्त्र, विशेष रूप से पुराने नियम का अनियंत्रित रूप से रूपकीकरण था...लेकिन काल्पनिक व्याख्याओं का सिलसिला मंच और व्याख्याता के डेस्क से समान रूप से अनियंत्रित रूप से प्रवाहित होता रहा। धर्मग्रंथ से जो अर्थ प्राप्त किए जा सकते थे वे सीमित थे, ऐसा कोई भी उचित रूप से महसूस कर सकता है, केवल दुभाषिया की सरलता से। यदि आपके पास बहुत चतुर व्यक्ति है तो आप किसी भी कथन में सभी प्रकार के अर्थ ढूंढ सकते हैं। “उनकी जो भी विसंगतियां रही हों (और वे कभी-कभी असंगत भी थीं), दोनों महान सुधारकों [लूथर और केल्विन] ने रूपक को सैद्धांतिक रूप से खारिज कर दिया - बार-बार और सबसे मजबूत भाषा में। पिछले अध्याय में लूथर और केल्विन दोनों को इस आग्रह में उद्धृत किया गया था कि यह दुभाषिया का कर्तव्य है कि वह अपने लेखक द्वारा इच्छित पाठ के स्पष्ट अर्थ पर पहुँचे।

डी। लेखकीय आशय और एकल अर्थ अब इसे "लेखकीय आशय" कहा जाने लगा है और यह एक विवादास्पद मुद्दा बन गया है। आप कितनी दूर जाते हैं? वाल्टर कैसर ने इसके बारे में बहुत कुछ लिखा है और उनका मानना है कि केवल वही व्याख्या वैध है जो लेखक का इरादा है। अब मैं उससे सहमत हूँ कि वह वहां क्या करने की कोशिश कर रहा है और निश्चित रूप से यह सही है। मुझे लगता है कि वह इस बात पर ध्यान नहीं देते कि पवित्रशास्त्र में एक से अधिक लेखक हैं। इस अर्थ में कि एक मानव लेखक है लेकिन मानव लेखक ने जो लिखा और कहा है उसका पर्यवेक्षण

करने वाला पवित्र आत्मा भी है। मुझे लगता है कि यह संभव है कि मानव लेखक "जितना वह जानता था उससे बेहतर" बोल सके। दूसरे शब्दों में, वह ऐसी बातें कह सकता था जिस पर उसे स्वयं विश्वास या समझ नहीं था और इसलिए वह उसका इरादा नहीं था; फिर भी इसका पर्यवेक्षण पवित्र आत्मा द्वारा किया गया था जो उन मुद्दों को संबोधित कर रहा था जो भविष्यवक्ता की संपूर्ण समझ से परे थे। इसलिए मैंने वहां एक योग्यता रखी है, लेकिन यह पवित्रशास्त्र के किसी भी कथन में एकाधिक अर्थों की तलाश के लिए थोक का दरवाजा नहीं खोलता है। ब्राइट कह रहे थे, "यह दुभाषिया का कर्तव्य है कि वह लेखक द्वारा इच्छित पाठ के स्पष्ट अर्थ तक पहुंचे। इसी तरह के उद्धरण, जिनमें उन्होंने रूपक के प्रति अपनी अवमानना व्यक्त की थी, लगभग इच्छानुसार प्रेरित किए जा सकते थे। लूथर, जिनकी शब्दावली किसी भी तरह से कमजोर नहीं थी, विशेष रूप से ज्वलंत है। उन्होंने घोषणा की कि ओरिजन के रूपक 'इतनी गंदगी के लायक नहीं हैं'; वह रूपक को विभिन्न प्रकार से 'पवित्रशास्त्र पर मैल', हमें लुभाने के लिए एक 'वेश्या', 'एक बंदर का खेल' कहता है, जो कुछ ऐसा है जो पवित्रशास्त्र को 'मोम की नाक' में बदल देता है (अर्थात् जिसे किसी भी वांछित आकार में मोड़ा जा सकता है), साधन जिससे शैतान अपनी चाल में आ जाता है। वह घोषणा करता है (भजन 22 की व्याख्या करते हुए) कि पवित्रशास्त्र मसीह का वस्त्र है और वह रूपक इसे 'चीथड़े-चिथड़े' कर देता है। 'कैसे,' वह चिल्लाता है, 'जब आप पवित्रशास्त्र के अर्थ को अनिश्चित बनाते हैं तो क्या आप निश्चितता के साथ विश्वास सिखाएंगे?' केल्विन भी उतना ही कठोर है। एक से अधिक बार, उन्होंने रूपक व्याख्याओं को पवित्रशास्त्र के अधिकार को कमजोर करने के लिए शैतान का आविष्कार कहा है। अन्यत्र, वह उन्हें 'बच्चे', 'दूर की कौड़ी' के रूप में वर्णित करता है, और वह घोषणा करता है कि ऐसे 'तुच्छ अनुमानों' में लिप्त होने की तुलना में अज्ञानता को स्वीकार करना बेहतर होगा। वह घोषणा करते हैं कि दुभाषिया को स्पष्ट अर्थ लेना चाहिए और यह अनिश्चित है कि उसे वह व्याख्या अपनानी चाहिए जो संदर्भ के लिए सबसे उपयुक्त हो।

1. सुधारक और एकल भावना इसलिए, धर्मग्रंथ के कथनों में एकाधिक इंद्रियों या अर्थों के इस प्रश्न पर सुधारक अपनी राय में बहुत मजबूत हैं जिन्हें वे अस्वीकार करते हैं। लेकिन मुद्दा गायब नहीं हुआ है। बर्नार्ड राम और व्याख्या पर उनकी पुस्तक कहती है, "सबसे लगातार व्याख्यात्मक पापों में

से एक है पवित्रशास्त्र के एक अंश पर दो व्याख्याएँ करना, शाब्दिक अर्थ की शक्ति को तोड़ना और भगवान के वचन को अस्पष्ट करना।" यदि हमें इसे समझना है, तो हम जे. बार्टन पायने के *बाइबिल भविष्यवाणी विश्वकोश के पृष्ठ 27 को फिर से देख रहे हैं*। अपने परिचयात्मक खंड में वे कहते हैं, "दो आधुनिक आंदोलनों को विशेष रूप से दोहरे अर्थ की व्याख्या की अपील की विशेषता दी गई है। एक ओर उदारवाद खड़ा है, एक प्रामाणिक भविष्यवाणी को समग्र रूप से नकारने के साथ... दूसरी ओर युगवादवाद खड़ा है, इसकी इस धारणा के साथ कि पुराने नियम के लेखन के साथ चर्च की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है। तथाकथित दोहरी पूर्ति के विपरीत एक (नए नियम) अर्थ की अवधारणा को बनाए रखने के तीन बुनियादी कारण सामने आते हैं। पहला व्याख्याशास्त्र की प्रकृति से ही उत्पन्न होता है। 17 वीं सदी के प्यूरिटन जॉन ओवेन ने बहुत पहले यह कहावत रखी थी, 'यदि धर्मग्रंथ के एक से अधिक अर्थ हैं, तो इसका कोई अर्थ नहीं है;' और हाल के अधिकांश लेखक इस बात से सहमत हैं कि दोहरी पूर्ति वस्तुनिष्ठ व्याख्या के साथ असंगत है। दूसरे शब्दों में, ओवेन जो कह रहा है वह यह है कि यदि धर्मग्रंथों में एक से अधिक अर्थ हैं, तो उनका कोई अर्थ नहीं है। यह व्याख्याशास्त्र को अनिश्चित बना देता है। यदि आपके पास एकाधिक इंद्रियाँ हैं, तो पाठ का अर्थ अनिश्चित हो जाता है।

फेयरबैर्न का कहना है कि क्राइस्ट का वास्तव में क्या मतलब है वह एक चीज है और यदि कई चीजें हैं, तो हेर्मेनेयुटिक्स अनिश्चित होगा। "फेयरबैर्न स्वयं मानते हैं कि इस तरह का दृष्टिकोण आवेदन की अनिश्चितता का कारण बनता है और व्यावहारिक रोजगार के लिए अर्थ को बहुत सामान्य बना देता है।" यह तर्क देने का उनका पहला कारण है कि हमें एक इंद्रिय की तलाश करनी चाहिए, न कि एकाधिक इंद्रियों की।

## 2. एनटी और एकल अर्थ

दूसरा कारण न्यू टेस्टामेंट का साक्ष्य है। "जैसा कि लॉकहार्ट ने भजन 16 के प्रति अधिनियम 2:29-31 के निर्णायक रवैये का वर्णन किया है, 'प्रेरित पतरस का तर्क है कि डेविड खुद का उल्लेख नहीं कर सका, क्योंकि वह मर गया और उसने भ्रष्टाचार देखा, लेकिन वह एक भविष्यवक्ता था, और उसने यीशु को पहले ही देख लिया था भ्रष्टाचार के बिना उठाया जाना चाहिए... प्रेरित के अर्थ में

गलती करना आसान नहीं लगता। ' इस प्रकार टेरी ने निष्कर्ष निकाला, 'पवित्रशास्त्र के शब्दों का एक निश्चित अर्थ होना था, और हमारा पहला उद्देश्य उस अर्थ की खोज करना और उसका कठोरता से पालन करना होना चाहिए... हम इस सिद्धांत को निराधार और भ्रामक मानते हुए खारिज करते हैं कि ऐसे मसीहाई भजन... में दोहरा अर्थ है समझो, और पहले डेविड या किसी अन्य शासक को संदर्भित करो, और दूसरा ईसा मसीह को।' वास्तव में नए नियम को पढ़ने से यह कहना सुरक्षित है कि किसी को दोहरी पूर्ति की संभावना पर कभी संदेह नहीं होगा।

### 3. ओटी और एकल अर्थ

“एकल पूर्ति का तीसरा कारण पुराने नियम के संदर्भ से साक्ष्य है। उदाहरण के लिए, फेयरबैर्न मानते हैं कि उनका सिद्धांत एकाधिक अर्थ कभी-कभी उन ठोस मामलों में काम करने में विफल रहता है जहां इसकी उपस्थिति दिखाने का प्रयास किया जाता है। टेरी स्पष्ट रूप से कहते हैं, 'भजन 2 की भाषा दाऊद या सुलैमान, या किसी अन्य सांसारिक शासक पर लागू नहीं होती... यशायाह 7:14 यीशु मसीह के जन्म के साथ पूरा हुआ (मैथ्यू 1:22), और कोई भी व्याख्याता कभी भी ऐसा नहीं कर सका पिछली पूर्ति साबित करने के लिए।

एक। यशायाह 7:14 अब यशायाह 7:14 उन ग्रंथों में से एक है जहां लोग अक्सर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इसमें दोहरा संदर्भ है। आहाज और यशायाह के समय में पैदा हुए एक बच्चे का संदर्भ, और साथ ही मसीह का संदर्भ। लेकिन पायने यहां यह तर्क दे रहे हैं कि यशायाह 7:14 में एक ही संदर्भ है। केवल एक ही महिला है जिसका उल्लेख लेखक कर सकता है। वहाँ एक बच्चा पैदा हुआ है जो हमारे साथ भगवान था। अब, माना कि, यदि आप पूरे संदर्भ में वापस जाते हैं और यशायाह 7:14 में चर्चा करते हैं, तो इसमें कुछ समस्याएं हैं। यह अधिक कठिन मार्गों में से एक है। मैं आज इसे करने के लिए समय नहीं लेना चाहता, लेकिन हम कुछ अन्य अनुच्छेदों के कुछ उदाहरण देखेंगे।

बी। व्यवस्थाविवरण 18 मुझे लगता है कि वास्तव में एक कठिन मार्ग व्यवस्थाविवरण 18 है।

हम पहले ही उस पर गौर कर चुके हैं। अब क्या यह भविष्यवाणी आंदोलन या ईसा मसीह, या किसी तरह दोनों का संदर्भ है? निःसंदेह, इसमें टाइपोलॉजिकल अप्रत्यक्ष संदर्भ है जो अर्थ की एकलता से संबंधित है लेकिन इसमें मसीह भी शामिल है। लेकिन व्यवस्थाविवरण 18, यशायाह 7:14, और मलाकी के अंतिम छंद - वे कठिन हैं। मसीहाई भजनों के कुछ गीत डेविड या सोलोमन के संदर्भ में और ईसा मसीह के संदर्भ में हैं। लेकिन उनमें से बहुत सारे ऐसे नहीं हैं जो वास्तव में कठिन हों।

#### 4. टेरी - सिंगल सेंस

अपने उद्धरणों में पृष्ठ 28 को देखें, पृष्ठ के नीचे और पृष्ठ 29 पर। फिर मैं पाठों के कुछ उदाहरण देखना चाहता हूँ। यह मिल्टन टेरी की *बाइबिल हेर्मेनेयुटिक्स से है*। यह काफी लंबा और कुछ हद तक जटिल है, लेकिन मुझे लगता है कि वह यहां मुद्दों को उजागर करता है। इसलिए मैं इसे सीधे पढ़ने के लिए समय लेना चाहता था। वह कहते हैं, " अब हमने जो व्याख्यात्मक सिद्धांत निर्धारित किए हैं, वे आवश्यक रूप से इस सिद्धांत को बाहर करते हैं कि पवित्रशास्त्र की भविष्यवाणियों में एक गुप्त या दोहरा अर्थ होता है। कुछ लोगों द्वारा यह आरोप लगाया गया है कि चूंकि ये दैवज्ञ स्वर्गीय और दिव्य हैं, इसलिए हमें उनमें कई गुना अर्थ खोजने की उम्मीद करनी चाहिए। उनकी आवश्यकताएँ अन्य पुस्तकों से भिन्न होनी चाहिए। इसलिए न केवल दोहरे अर्थ का सिद्धांत, बल्कि तीन गुना और चार गुना अर्थ का सिद्धांत उत्पन्न हुआ है, और रब्बी इस हद तक चले गए कि उन्होंने जोर देकर कहा कि "पवित्रशास्त्र के प्रत्येक शब्द में अर्थ के पहाड़ हैं।"

हम आसानी से स्वीकार कर सकते हैं कि धर्मग्रंथ कई गुना व्यावहारिक *अनुप्रयोगों में सक्षम* हैं; अन्यथा वे सिद्धांत, सुधार और धार्मिकता के निर्देश के लिए इतने उपयोगी नहीं होंगे। लेकिन जैसे ही हम इस सिद्धांत को स्वीकार करते हैं कि पवित्रशास्त्र के कुछ हिस्सों में एक गुप्त या दोहरा अर्थ होता है, हम पवित्र खंड में अनिश्चितता का एक तत्व पेश करते हैं, और सभी वैज्ञानिक व्याख्याओं को अस्थिर कर देते हैं। डॉ. ओवेन कहते हैं, 'यदि धर्मग्रंथ के एक से अधिक अर्थ हैं, तो इसका कोई अर्थ नहीं है।' 'मैं मानता हूँ,' राइल कहते हैं, 'कि पवित्रशास्त्र के शब्दों का एक निश्चित अर्थ होना चाहिए था, और हमारा पहला उद्देश्य उस अर्थ की खोज करना और उसका कठोरता से

पालन करना होना चाहिए... यह कहना कि शब्दों का कोई मतलब केवल इसलिए *होता* है उन्हें यह कहकर प्रताड़ित किया *जा सकता है* कि यह पवित्रशास्त्र को संभालने का सबसे अपमानजनक और खतरनाक तरीका है।'

स्टुअर्ट कहते हैं, 'व्याख्या की यह योजना भाषा के सामान्य नियमों को त्याग देती है और अलग रख देती है। बाइबल के अनुसार, किसी भी पुस्तक, ग्रंथ, पत्र, प्रवचन, या वार्तालाप में, कभी भी किसी एक व्यक्ति द्वारा अपने साथी प्राणियों को लिखा, प्रकाशित या संबोधित नहीं किया जा सकता है ( जब तक कि खेल के तरीके से , या धोखा देने के इरादे से नहीं), दोहरा भाव पाया जाए. वास्तव में, सभी भाषाओं में, शायद, व्यंग्य, रहस्य, *दोहरे अर्थ वाले वाक्यांश* और इसी तरह के वाक्यांश मौजूद हैं ; ऐसे बुतपरस्त दैवज्ञों की बहुतायत रही है जो दो व्याख्याओं के प्रति संवेदनशील थे, लेकिन इन सबके बीच भी वास्तविकता में एक से अधिक अर्थ या अर्थ कभी नहीं रहे और न ही ऐसी कोई योजना बनी कि होनी चाहिए। भाषा की अस्पष्टता का सहारा पाठक या श्रोता को गुमराह करने के लिए, या भविष्यवक्ताओं की अज्ञानता को छिपाने के लिए, या भविष्य की अत्यावश्यकताओं के बीच अपने श्रेय को सुनिश्चित करने के लिए जानबूझकर लिया गया है और किया गया है; लेकिन यह शब्दों के गंभीर और *प्रामाणिक दोहरे अर्थ* वाले मामले से बिल्कुल अलग है । न ही हम एक पल के लिए, धर्मग्रंथों की गरिमा और पवित्रता का उल्लंघन किए बिना, यह मान सकते हैं कि प्रेरित लेखकों की तुलना पहेलियों, उलझनों, पहेलियों और अस्पष्ट बुतपरस्त भविष्यवाणियों के लेखकों से की जाए।'

##### 5. प्रकार और प्रति-प्रकार दृष्टिकोण

कुछ लेखकों ने इस विषय को प्रकार और प्रतिरूप के सिद्धांत से जोड़कर भ्रमित कर दिया है।" अब ध्यान दें कि वह यहां क्या करता है। "चूंकि पुराने नियम के कई व्यक्ति और घटनाएं आने वाले महान लोगों की तरह थीं, इसलिए उनका सम्मान करने वाली भाषा को दोहरे अर्थ में सक्षम माना जाता है।" दूसरे शब्दों में, प्रकार और प्रतिप्रकार के स्थान पर संस्थाएँ, व्यक्ति या घटनाएँ - प्रतीकों के रूप में ठोस इकाइयाँ या वास्तविकताएँ जो सत्य को चित्रित करती हैं जो उन संस्थाओं, घटनाओं या व्यक्तियों का प्रतीक होंगी - कुछ व्याख्याकार जो करते हैं वह वास्तव में एक

टाइपोलॉजिकल भाषा की बात करता है। यह एक महत्वपूर्ण अंतर है। देखिए वह यहां क्या कह रहे हैं। “कुछ लेखकों ने इस विषय को प्रकार और प्रतिरूप के सिद्धांत से जोड़कर भ्रमित कर दिया है। जितने भी लोग हैं, पुराने नियम की घटनाएँ आने वाली महान घटनाओं की तरह थीं, इसलिए उनका सम्मान करने वाली भाषा को दोहरे अर्थ में सक्षम माना जाता है। तो दूसरे शब्दों में, भाषा टाइपोलॉजिकल भाषा है। “ऐसा माना जाता है कि दूसरा स्तोत्र डेविड और क्राइस्ट दोनों को संदर्भित करता है, और यशायाह 7:14-16 भविष्यवक्ता और मसीहा के समय में पैदा हुए एक बच्चे को संदर्भित करता है। भजन 45 और 72 में, सुलैमान और ईसा मसीह के लिए दोहरा संदर्भ और यशायाह 34:5-10 में एदोम के खिलाफ भविष्यवाणी को अंतिम दिन के सामान्य न्याय को समझने के लिए माना जाता है। परन्तु यह देखा जाना चाहिए कि प्रकार के मामले में धर्मग्रंथ की भाषा में कोई दोहरा अर्थ नहीं है। प्रकार स्वयं ऐसे हैं क्योंकि वे आने वाली चीजों को पूर्व निर्धारित करते हैं और इस तथ्य को किसी विशेष परिच्छेद में भाषा के उपयोग की भावना के प्रश्न से अलग रखा जाना चाहिए।

6. एक मॉडल के रूप में व्यवस्थाविवरण 18 क्या आपको बात समझ में आई? यदि आप उस व्यवस्थाविवरण 18 परिच्छेद पर वापस जाएं, तो वहां की भाषा किस बारे में बात कर रही है? आप जानते हैं कि मेरा निष्कर्ष क्या था. भाषा पुराने नियम के समय में भविष्यसूचक संस्था के बारे में बात कर रही है क्योंकि पहले और बाद के संदर्भ में यह बात की जा रही है कि आपको बुतपरस्त भविष्यवक्ताओं के पास नहीं जाना चाहिए। यह कह रहा है कि उन्हें सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं में अंतर करने के लिए एक परीक्षा दी गई है। मूसा के चले जाने के बाद हम परमेश्वर के रहस्योद्घाटन को कैसे प्राप्त करेंगे? तो भाषा भविष्यवाणी क्रम के बारे में बात कर रही है। भविष्यवाणी का क्रम स्वयं प्रतीकात्मक हो सकता है क्योंकि ये ईश्वर का वचन बोलने वाले मानवीय उपकरण हैं। मसीह ईश्वर और मनुष्य दोनों हैं जो हमारे लिए ईश्वर का वचन लाते हैं। तो टाइपोलॉजिकल रूप से, भविष्यसूचक संस्था मसीह की ओर इशारा कर सकती है, लेकिन यह वह भाषा नहीं है जिसे आप देखते हैं, यह टाइपोलॉजिकल भाषा नहीं है। यह भविष्यवक्ता संस्था है।

7. भजन 2 पर टेरी और अन्य। यदि आप टाइपोलॉजिकल भाषा को स्वीकार करते हैं, तो आपने वास्तव में आध्यात्मिकता के इस सिद्धांत को स्वीकार कर लिया है, और फिर आप यशायाह 11 के साथ वही कर सकते हैं जो यंग करता है। यह निर्वासन के बारे में बात नहीं कर रहा है, यहूदी लोग अपनी मातृभूमि में वापस आ रहे हैं, यह भौतिक वास्तविकताओं के बारे में बात नहीं कर रहा है, उन्हें लगता है कि यह आध्यात्मिक वास्तविकताओं के बारे में बात कर रहा है। यह टाइपोलॉजिकल भाषा है। टेरी इसे स्वीकार नहीं करते, लेकिन टाइपोलॉजिकल भाषा जैसी कोई वैध चीज़ होती है। वह कहते हैं, “हमने दिखाया है कि भजन 2 की भाषा डेविड या सोलोमन या किसी अन्य शासक पर लागू नहीं होती है। भजन 45 और 72 के बारे में भी यही कहा जा सकता है। यशायाह 7:14 ईसा मसीह के जन्म के समय पूरा हुआ था, और कोई भी प्रतिपादक कभी भी पिछली पूर्ति को साबित करने में सक्षम नहीं हुआ है। एदोम के विरुद्ध दैवज्ञ, बेबीलोन के विरुद्ध दैवज्ञ, सर्वनाशकारी भविष्यवाणी के अत्यधिक गढ़े हुए आवरण में लिपटा हुआ है, और दोहरे अर्थ के सिद्धांत को कोई वारंट नहीं देता है। मैथ्यू का चौबीसवां भाग, जिस पर आमतौर पर इस सिद्धांत का समर्थन करने के लिए भरोसा किया जाता है, पहले से ही किसी गुप्त या दोहरे अर्थ का कोई वैध सबूत प्रस्तुत नहीं करता है... पहली भविष्यवाणी एक अच्छा उदाहरण है। स्त्री के वंश और सर्प के वंश के बीच की शत्रुता को हजारों रूपों में प्रदर्शित किया गया है। परमेश्वर के लोगों से किए गए वादे के अनमोल शब्द प्रत्येक व्यक्तिगत अनुभव में कमोबेश पूर्णता पाते हैं। लेकिन ये तथ्य दोहरे अर्थ के सिद्धांत को कायम नहीं रखते हैं। प्रत्येक मामले में भाव प्रत्यक्ष और सरल है; अनुप्रयोग और चित्र अनेक हैं।” यह उत्पत्ति 3:15 का वादा है, “स्त्री का वंश साँप को कुचल डालेगा। मैं तेरे वंश और उसके वंश के बीच शत्रुता उत्पन्न करता हूँ।” “प्रत्येक मामले में भाव प्रत्यक्ष और सरल है; अनुप्रयोग और चित्र अनेक हैं। इस तरह के तथ्य हमें प्रत्येक विशिष्ट कथन में दो या दो से अधिक अर्थ खोजने की उम्मीद के साथ सर्वनाशकारी भविष्यवाणियों में जाने और फिर घोषणा करने का अधिकार नहीं देते हैं: यह कविता बहुत पहले की एक घटना को संदर्भित करती है... बेबीलोन के खंडहर में इसकी आंशिक पूर्ति हुई थी, या एदोम, लेकिन यह भविष्य में इससे भी अधिक भव्य पूर्ति की प्रतीक्षा कर रहा है। बेबीलोन, या नीनवे, या यरूशलेम का निर्णय वास्तव में एक प्रकार हो सकता है, जो पूरी तरह से वैध है, अन्य सभी समान निर्णय, और सभी राष्ट्रों और युगों के लिए एक

चेतावनी है; लेकिन यह कहने से बहुत अलग है कि जिस भाषा में उस फैसले की भविष्यवाणी की गई थी वह केवल आंशिक रूप से पूरा हुआ था जब बेबीलोन, या नीनवे, या यरूशलेम गिर गया था, और अभी भी इसके पूर्ण होने का इंतजार है। एक भेद है. क्या आप वहां तर्क की पंक्ति का पालन करते हैं?

8. चित्रण: डैनियल 8 मैं आपको एक उदाहरण देता हूं। मैं आपको दो दृष्टांत देना चाहता था लेकिन आज हमारे पास वह सब करने का समय नहीं होगा, लेकिन डैनियल 8 से एक दृष्टांत है। क्या आप में से कोई पुरानी मूल स्कोफील्ड बाइबिल से परिचित है? यदि आप दानिय्येल अध्याय 8 पढ़ते हैं - जो मुझे लगता है कि यह प्रकारों के बारे में बात करने वाला अध्याय है - दानिय्येल 8:9 में लिखा है, "उनमें से एक से एक छोटा सा सींग निकला जो दक्षिण की ओर पूर्व की ओर और सुहावने देश की ओर बहुत बड़ा हो गया था।" उस छोटे सींग के बारे में स्कोफील्ड बाइबिल में नोट कहता है, "यहां 175 ईसा पूर्व में एक भविष्यवाणी पूरी हुई थी" तो यह श्लोक 9 में इस छोटे सींग का संदर्भ है। जब आप अध्याय में आगे बढ़ते हैं तो आप श्लोक 15 में देखते हैं कि यह कहता है " मैं, दानिय्येल, ने वह स्वप्न देखा था, और उसका अर्थ ढूंढा, तब क्या देखता हूं कि एक मनुष्य का रूप मेरे सामने खड़ा है।" फिर उन्होंने इसका मतलब समझाया. जब आप इस छोटे सींग का अर्थ समझेंगे, जो श्लोक 24 और 25 में है, तो यह कहता है, "वह शक्तिशाली बनेगा, परन्तु अपनी शक्ति से नहीं। वह आश्चर्यजनक तबाही मचाएगा। वह शूरवीरों और पवित्र लोगों को नष्ट कर देगा। वह छल को पनपने देगा। जब वे सुरक्षित महसूस करेंगे तो वह स्वयं को बड़ा करेगा, परन्तु वह बहुतों को नष्ट कर देगा। वह हाकिमों के हाकिम के विरुद्ध भी खड़ा होगा परन्तु वह बिना सुधार के तोड़ दिया जाएगा।" और इन नोट्स में टिप्पणी यह है कि छंद 24 और 25 एंटीओकस एपिफेन्स से आगे जाते हैं और स्पष्ट रूप से डैनियल 7 के छोटे सींग का उल्लेख करते हैं। और फिर एंटीओकस और जानवर दोनों का कथन है, लेकिन जानवर मुख्य रूप से छंद 24 और 25 में दिखाई देता है। तो डैनियल अध्याय 8 के छोटे सींग की व्याख्या में, जो मुझे लगता है कि यदि आप सभी विवरणों को देखते हैं तो यह एंटीओकस का संदर्भ है, जब आप छोटे सींग की व्याख्या करते हैं, तो यहां नोट छंद 24 और 25 कह रहा है एक ही समय में और एक ही शब्द में एंटीओकस और एंटीक्रिस्ट दोनों से बात कर रहे हैं

- एक दोहरा संदर्भ। छंद 10-14 में से, जहां अध्याय के पहले खंड में आपको उस छोटे सींग के बारे में अधिक जानकारी है, नोट्स 10-14 के बारे में कहते हैं, "ऐतिहासिक रूप से यह एंटीओकस में और उसके द्वारा पूरा किया गया था, लेकिन अधिक गहन और अंतिम अर्थ में एंटीओकस एडुम्ब्रेट्स दानियेल के छोटे सींग की भयानक निन्दा 7।" मुझे इससे कोई समस्या नहीं है क्योंकि मुझे लगता है कि एंटीओकस एक प्रकार का ईसा-विरोधी है, लेकिन यहां शब्द आपको एंटीओकस के बारे में बताते हैं। लेकिन नोट्स में अगला कथन है, "डैनियल 8:10-14 में दोनों छोटे सींगों के कार्य मिश्रित हैं।" तो आप 10-14 में छोटे सींग के विस्तृत विवरण में देख सकते हैं कि शब्द एंटीओकस पर लागू होते हैं और साथ ही और उन्हीं शब्दों में एंटीक्रिस्ट पर भी लागू होते हैं। "शब्दों का मिश्रण है, दोनों दृष्टि में हैं।"

श्लोक 19 के अंत में यह कहा गया है, "अंत के समय होगा" और नोट कहता है, "दो छोर दिखाई दे रहे हैं। एक, ऐतिहासिक रूप से, सिकंदर के यूनानी साम्राज्य के एक तिहाई हिस्से का अंत, जिसके विभाजन से पद 9 का छोटा सींग पैदा हुआ।" यह उस ग्रीसियन काल का अंत है। "लेकिन दो, भविष्यवाणी के अनुसार, अन्यजातियों के समय का अंत। दोनों छोर दृश्य में हैं। अंत का समय ग्रीसियन साम्राज्य और अन्यजातियों के समय का अंत है—एक दोहरा संदर्भ। तो यह उस तरीके का एक उदाहरण है जिसमें कुछ व्याख्याकार भविष्यसूचक कथनों से अर्थ खोजने के लिए दोहरे संदर्भ के इस सिद्धांत का उपयोग करते हैं।

9. चित्रण: मलाकी 4:5-6 मैं मलाकी 4:5-6 को और अधिक विस्तार से देखना चाहता हूं और हम अगली बार अपने सत्र की शुरुआत में ऐसा करेंगे। लेकिन मलाकी 4:5-6 आइए इसे एक मिनट के लिए देखें। यह कहता है, "देखो, मैं प्रभु के उस महान और भयानक दिन से पहले तुम्हारे पास नबी एलियाह को भेजूंगा। वह पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके पिता की ओर फेर देगा, नहीं तो मैं आकर पृथ्वी पर शाप डालूंगा। यहां दिलचस्प बात यह है कि आपके पास इस अनुच्छेद के नए नियम के संदर्भ हैं और नए नियम के कुछ संदर्भ इस भविष्यवाणी को जॉन द बैपटिस्ट पर लागू करते हैं। तो फिर सवाल यह उठता है कि आप इस भविष्यवाणी का क्या करते हैं? क्या यह पूरा हो गया है या अभी भी पूरा होना बाकी है? क्या यह जॉन

द बैपटिस्ट की बात कर रहा है? क्या यह एलिय्याह की बात कर रहा है? क्या यह दोहरा भाव है? इसके साथ क्या किया जाएगा? मैं अगली बार इसे और अधिक विस्तार से देखना चाहता हूँ और आपको कुछ ऐसे तरीके बताना चाहता हूँ जिनसे दुभाषियों ने इसका निपटारा किया है। यह दोहरे अर्थ से संबंधित अधिक कठिन अनुच्छेदों में से एक है।

10. डबल सेंस पर वन्रॉय का निष्कर्ष अब एक स्पष्ट वक्तव्य और मैं समाप्त करूँगा। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि दोहरी समझ पाना असंभव है। मुझे नहीं लगता कि आपको व्याख्या के नियम बाहर से लाने चाहिए और उन्हें व्याख्या के किसी सूत्र में फिट करने के लिए धर्मग्रंथ पर थोपना चाहिए। मुझे ऐसा लगता है, यदि ऐसे स्पष्ट मार्ग हैं जो आपको पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के इच्छित तरीके तक ले जाते हैं, तो ठीक है, ऐसा ही होगा। धर्मग्रंथ को हमारा मार्गदर्शक बनना होगा। मैं आश्चर्य नहीं हूँ कि ऐसे कुछ अंश हैं जो आपको ऐसा करने के लिए बाध्य करते हैं। इसलिए मैं कह रहा हूँ कि आपको एकाधिक इंद्रियों की तलाश में पाठ पर नहीं आना चाहिए। यदि आपको पवित्रशास्त्र द्वारा ही ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता है, तो ठीक है, लेकिन आपको पवित्रशास्त्र से यह प्रदर्शित करना होगा कि आपको कथन को इसी तरह समझना चाहिए, जिसमें प्रमाण का भारी बोझ होता है।

प्रतिलेखित: केटी व्होली, मैट गॉब्सन, विलियम महोनी, सारा ओविंस्की, ग्रेस  
कनिंघम, बेक्का ब्रुले और स्टीफन डेवलोस (सं.)।  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा प्रारंभिक संपादन  
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया